MR. BAIJU BAWRA
DOE
A.N.D. College
24.05.2020

B.Ed-
Course-
Unit-
Topic- place of Mother language in the curriculum.

PLACE OF MOTHER LANGUAGE IN THE CURRICULUM

मातृभाषा के शब्दों में हमारी जातीय संस्कृति का इतिहास छिपा रहता है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना बालक का सर्वांगीण विकास असंभव है। बालकों का बौद्धिक, मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास उनकी भाषा क्षमता पर ही निर्भर करता है। बालकों के संवेगों, स्थायी भावों आदि का मातृभाषा से घनिष्ट संबंध है।

बाल-मनोविकास का प्रधान साधन मातृभाषा की ही शिक्षा है। विद्यार्थी के मानसिक, ज्ञान विचार-निर्णय, निर्माण कुशलता, मौलिकता का विकास इसी पर निर्भर है। भावानुभूति और व्यक्तित्व का विकास भी इसी के सहारे होता है, क्योंकि मातृभाषा को सीखने में अधिक कठिनाई नहीं पड़ती है बिना पढ़ाये ही बालक उसकी सीधी मातृभाषा बोल लेता है। और उसके प्रत्येक कार्य का मातृभाषा से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो जाता है।

मातृभाषा सभी सब विषयों ज्ञान विज्ञानों का मूलाधार होती है वह स्वयं एक विषय ही नहीं है, वरन् अन्य विषयों का आधार स्तम्भ है। जो छात्र स्पष्ट रूप से न विचार कर सकता है। वह किसी भी विषय में अच्छा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है, चाहे वह इतिहास हो, चाहे विज्ञान हो और चाहे कोई अन्य विषय। इसलिए मातृभाषा का पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है।

Scanned with CamScanner

जिस भाषा में बच्चा सोचता है, बोलता है और स्वप्न देखता है, वही पाठशाला में पढ़े। शिक्षा और मानव-विकास के लिए मुख्य एवं नितान्त आवश्यक है। हम अपने भावों की अभिव्यक्ति बोलकर या लिखकर करते हैं। कभी-कभी कुछ ऐसे विचार उठते हैं, जो बिना मातृभाषा के व्यक्त नहीं हो पाते। साथ ही कोई भी ऐसा व्यक्ति सच्चा नागरिक नहीं हो सकता, जिसे मातृभाषा बोलने और लिखने की उचित शिक्षा नहीं दी गई हो। अच्छे नागरिक के गुण शुद्ध विचार, विचारों की शुद्ध एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति, विचारों की सच्चाई, कार्यकुशलता, क्रियाशीलता आदि तब तक नहीं आ सकते जब तक कि मातित्व का विकास न हो, और ज्ञान तथा मस्तिष्क का विकास मातृभाषा द्वारा ही संभव है।